श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान

रचयिता
राजमल पवैया

प्रकाशक

A{Ib ^maVr` O¡Z `wdn \¡$S>aoeZ

E-4, ~mnyZJa, O`nwa – 302015

\$moZ : 0141-2707458, 2705581

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रथम संस्करण – १ हजार
१५ जनवरी २०१६
(मकर संक्रांति)

मूल्य – ८ रुपये

मुद्रक :
सन् एन सन् प्रेस
तिलक नगर, जयपुर

प्रकाशकीय

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के माध्यम से स्व. श्री राजमलजी पवैया कृत श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का प्रकाशन करते हुये हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

जिनेन्द्र भगवान के गुणानुवाद द्वारा वीतराग भाव के पोषण हेतु पूजन विधानों का आलम्बन लेने की परम्परा अति प्राचीनकाल से चली आ रही है। जिनेन्द्र भगवान के गुणानुवाद के प्रसंग में उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के प्रतिपादन की परम्परा का सूत्रपात आचार्य समन्तभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में किया, जिसका निर्वाह उनके परवर्ती आचार्यों एवं विद्वानों ने समय-समय पर किया है।

पंचपरमेष्ठी भगवन्त जिनशासन में शाश्वत आराध्य हैं। उनकी वंदना में समर्पित यह श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान स्व. पण्डित राजमलजी पवैया की महत्वपूर्ण कृति है। इसके माध्यम से भगवान महावीर स्वामी की आराधना निरन्तर वृद्धिंगत हो तथा उनके बताये मार्ग पर चलकर हम सभी आत्मकल्याण करें – यही पवित्र भावना है।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (महामंत्री)

ॐ

श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान

मंगलाचरण

अनुष्टुप्

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम्।
मंगलं शुद्धचैतन्यं आत्मधर्मोऽस्तु मंगलम्।।
मंगलं नेमिनाथाय वीतराग महा प्रभु।
पंचकल्याणक भूषित परम हितकर मंगलम्।
ऊर्जयन्त महान गिरिपति नेमिनाथ जिनेश्वरम्।
सौख्यप्रद पंचकल्याण नव विधान सुमंगलम्।।

छंद-दोहा

जयति पंच परमेष्ठी, जिनप्रतिमा जिनधाम।
जय जगदम्बे दिव्यध्वनि, श्री जिनधर्म प्रणाम।।
श्री चौबीस जिनेश प्रभु, उत्तम मंगल रूप।
करुणा से दर्शा रहे, सबको आत्मस्वरूप।।

छंद-चामर

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञानरूप मंगलम्।
गणधरादि सर्व साधु ध्यानरूप मंगलम्।।
जैन धर्म सार्व धर्म विश्व धर्म मंगलम्।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम्।।
वर्तमान चतुर्विंशति जिनेन्द्र मंगलम्।
ज्ञानरूप ध्यानरूप आत्मेन्द्र मंगलम्।।
सर्व अरहंत सिद्ध भगवंत मंगलम्।
सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मंगलम्।।
सर्व जिन चैत्य चैत्यालय मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि धर्म जिन मंगलम्।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्

श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान

समुच्चय पूजन

स्थापना

छंद-रोला

गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याण सुभूषित।
नेमिनाथ भगवान हमारे रंच न दूषित।।
गर्भ रात्रि माता को सोलह स्वप्न दिखाए।
जन्म समय तीनों लोकों में आनन्द छाए।।
विविध भाँति के रत्न सुरों ने आ बरसाए।
मेरु सुदर्शन पर अभिषेक हुआ सुख पाए।।
जीवों की करुणा पुकार सुन विराग जागा।
तप कल्याण हुआ जगती का भ्रम-तम भागा।।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभु सर्वज्ञ हो गए।
सकल ज्ञेय के ज्ञाता प्रभु आत्मज्ञ हो गए।।
महामोक्ष कल्याण हुआ गिरनारी गिरि पर।
योग नाश ध्रुवपद पाया त्रैलोक्य शिखर पर।।
यही पंचकल्याण महोत्सव मंगलकारी।
विनय भाव से पूज रहा हूँ भव भयहारी।।

छंद-सोरठा

पूजूँ पंचकल्याण, नेमिनाथ भगवान का।
गाऊँ मंगल गान, यही भावना है प्रभो।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।*

** सामग्री चढ़ाते समय स्वयं क्षिपामि तथा दूसरों को निर्देश देते समय क्षिपेत् बोलना चाहिए।*

अष्टक

छंद-गीतिका

शौर्यपुर यमुना नदी से आज लाऊँ शुद्ध जल।
जन्म जरा मृत्यु विनाशक ज्ञान पाऊँ समुज्ज्वल।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त महान गिरि से तपो चन्दन मिल गया।
भवताप ज्वर नाश के हित ज्ञान उर में झिल गया।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सौराष्ट्र की ही भूमि के अक्षत सुगन्धित हैं प्रधान।
प्राप्त अक्षय पद करूँ मैं जो सदा ही है महान।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सहसा वन अनूठे ज्ञान-ध्यान विरागमय।
काम-बाण विनाश कर्ता गुण भरे हैं शीलमय।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरनार पर्वत तलहटी से सुचरु लाऊँ हे प्रभो।
क्षुधारोग विनाश करके तृप्त पद पाऊँ विभो।।

श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वारिका से दीप लाऊँ स्व-पर ज्ञान विवेकमय।
गुण अनन्त महान पाऊँ पूर्ण केवलज्ञानमय।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नगर जूनागढ़ सु-वन से धूप लाऊँ बावनी।
अष्ट कर्म विनाश-कर्ता सदा गाऊँ लावनी।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भारत भारती के फल चढ़ाऊँ भावमय।
मोक्षफल पाऊँ प्रभो मैं अभी कर संसार जय।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलावट के अर्घ्य से प्रभु धर्म भी होता नहीं।
बिना निज एकत्व के पद भी अनर्घ्य होता नहीं।।
श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र को नित भाव से वन्दन करूँ।
पंचकल्याणक विभूषित देव की पूजन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-दिग्वधू

मेरे निज अन्तर में ध्रुव ज्ञान का सागर है।
इसके तट पर ही तो निज अनुभव गागर है।।
समभावी रस पूरित समभावी रंग भरी।
नव रांगोली चित्रित निज रूप उजागर है।।
इसके तल में श्रद्धा की भूमि परम पावन।
शिवसुख का स्रोत यही समकित रस निर्झर है।।
इसके दोनों तट पर चारित्र नाचता है।
अनुभूति गीत गाती ध्रुव धुन का ही स्वर है।।
षट् द्रव्यमयी ॠतुएँ नित रंग बदलती हैं।
निज के ही तट पर तो संयम का तरुवर है।।
संयम तरुवर पर ही जप तप व्रत खिलते हैं।
शुद्धात्म पराग स्वयं नित झरते झर झर हैं।।
जो यह पराग पाता वह निर्मल हो जाता।
निज आत्म तत्त्व सातों तत्त्वों से सुन्दर है।।
छवि नव पदार्थ की लख परमार्थ प्रकट होता।
निश्चय भूतार्थ सहज आश्रय हित दृढ़तर है।।
चिद्रूप चंद्रिका ही निज शिवपथ दर्शक है।
निज की ही ओर लखो तो शिवसुख मनहर है।
कैवल्य लक्ष्मी ही शिवपुर ले जाती है।
संग मोक्ष-लक्ष्मी के रहती जीवन भर है।।
स्वात्मानुभूति लक्ष्मी दोनों की माता है।
चैतन्य स्वरूपी है अपने ही भीतर है।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-सोरठा

पूजों पंचकल्याण, नेमिनाथ भगवान का।
गाऊँ मंगलगान, सादि अनन्तों काल तक।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ गर्भकल्याणक पूजन

स्थापना

छंद–दोहा

नेमिनाथ भगवान का, दिव्य गर्भकल्याण।
धन्य शौर्यपुर हो गया, गूँजे मंगल गान।।
गर्भ पूर्व छह मास से, बरसे रत्न अपार।
नगरी की रचना हुई, बहु मंगल दातार।।
शिवादेवी माँ के हृदय, छाया बहु आनन्द।
रयनि स्वप्न सोलह लखे, पाया परमानन्द।।
पति से फल पूछा, कहा – आयेंगे भगवान।
धन्य हुई पर्याय तुव, गाओ मंगल गान।।
षष्ठी कार्तिक शुक्ल की, शिवादेवी उर धन्य।
आए आप जयन्त तज, होते मोद अनन्य।।

छंद–शार्दूलविक्रीडित

वन्दूँ नेमि जिनेश आपको नित, तीर्थेश जिनवर प्रभो।
तीर्थंकर बाईसवें महा हे बालयति! तुम विभो।।
नाशा तुमने दर्प घातिया का, कैवल्य पाया महा।
करके फिर अघाति कर्म क्षय भी, निर्वाण पाया परम।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

छंद–विधाता

नीर अनुभवमयी लाऊँ त्रिविध रोगों को क्षय करने।
मार्ग सम्यक् अभी पाऊँ विभावी भाव सब हरने।।

गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुनः इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध चन्दन स्वशीतल गुणमयी पाऊँ भवातप हर।
परम आनन्द नित पाऊँ स्वयं परभाव सब जयकर।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुनः इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध अक्षत धवल उज्ज्वल भावमय शीघ्र ही लाऊँ।
स्व-पद अक्षय धरूँ उर में स्वयं को ही सदा ध्याऊँ।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुनः इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध हो पुष्प अति कोमल सुगंधित शील गुण दाता।
काम-मद रोग विनशाऊँ स्व-पद निष्काम का दाता।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुनः इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु अनुभव स्व-रसमय ला क्षुधा का रोग विनशाऊँ।
अनाहारी स्व-पद पाऊँ तृप्त पद अपना प्रकटाऊँ।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुनः इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मिथ्यात्व तमनाशक ज्ञानमय आज लाऊँगा।
ज्ञान कैवल्य प्रकटा कर उजाला पूर्ण पाऊँगा।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुन: इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप निज ध्यानमय लाऊँ धर्म दश की मनोहारी।
रोग सारे करूँ मैं क्षय सदा को जो है दुखकारी।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुन: इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान फल शीघ्र ही लाऊँ मोक्षफल अपना मैं पाऊँ।
योग सारे करूँ मैं क्षय जगत दुख पूर्ण विनशाऊँ।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुन: इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य निज भावमय लाऊँ स्वपद पाऊँ अनर्घ्य अपना।
ज्ञान के नैन खुलते ही जगत हो जाए सब सपना।।
गर्भ कल्याण मैं पूजूँ नेमि जिनवर का मंगलमय।
पुन: इस गर्भ धारण का रोग भी मैं करूँ प्रभु क्षय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-दोहा

सोलह स्वप्न प्रसिद्ध का, फल अति मंगलकार।
तीर्थंकर प्रभु आयेंगे, गूँजी जय-जयकार।।

छंद-चौपाई

प्रथम स्वप्न ऐरावत जान। महा पुण्यधारी सुत मान।
द्वितीय स्वप्न में वृषभ प्रसिद्ध। पुत्र धर्मधारी सुप्रसिद्ध।।
तृतीय स्वप्न में सिंह प्रधान। बलधारी सुत होय महान।
चतुर्थ स्वप्न देखी लक्ष्मी। अनन्त चतुष्टय की लक्ष्मी।
पंचम है लक्ष्मी अभिषेक। मेरु सुदर्शन हो अभिषेक।।
षष्टम स्वप्न चन्द्र छविमान। महाप्रतापी सुत लो जान।
सप्तम स्वप्न सूर्य बलवान। तेजस्वी सुत होगा जान।।
अष्टम स्वप्न कलश लो जान। भोक्ता होगा सुनिधि महान।
नववाँ स्वप्न मीन दो जान। लौकिक सुख भोक्ता सुत मान।।
दशवाँ स्वप्न सरोवर जान। सहस्र अष्ट लक्षण सुत मान।
एकादशम स्वप्न सागर। केवलज्ञान लब्धि आगर।।
स्वप्न द्वादशम सिंहासन। महाराज्य भोक्ता पावन।
त्रयोदशम में स्वर्ग विमान। स्वर्ग सौख्य त्यागी लो जान।।
चतुर्दशम धरणेन्द्र विमान। अवधिज्ञान धारी गुणवान।
पंचदशम रत्नों की राशि। गुण अनन्त की हो उर राशि।।
स्वप्न षोडशम अग्नि निर्धूम। अष्ट कर्म ईंधनवत् चूर्ण।
वृषभ हृदय में करे प्रवेश। तीर्थंकर सुत त्रैलोक्येश।।
स्वप्न फलों को सुनकर मात। पुलकित हुई जगत विख्यात।
नृपति समुद्रविजय हर्षाय। धन्य-धन्य ऐसे सुत आय।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-सोरठा

पूजा गर्भ कल्याण, नेमिनाथ भगवान का।
करूँ आत्मकल्याण, गर्भ न धारूँ अब प्रभो।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ जन्मकल्याणक पूजन

स्थापना

छंद–जोगीरासा

जन्म महोत्सव नेमिकुमार का सबको ही सुखदाता।
बजती देवों की दुन्दुभियाँ सबको आनन्द आता।।
इन्द्र सुरासुर सब ही आते प्रभु अभिषेक रचाते।
सुरगिरि पर ले जाते प्रभु को निज उर आनन्द लाते।।
एक सहस्र अष्ट जल कलशा स्वर्णिम प्रभु पर करते।
निज उर की कालुषता धोते सर्व पापमल हरते।।
विविध प्रकार महोत्सव होते जग को मंगल–दाता।
परम जन्म कल्याण महोत्सव त्रिभुवन में विख्याता।।
जन्म समय के दश अतिशय से शोभित है तीर्थंकर।
भव्यों के कल्याण हेतु आते हैं पूज्य जिनेश्वर।।

छंद–दोहा

श्रावण शुक्ला षष्ठि को, जन्मे नेमि महान।
शौरीपुर में हो रहे, घर–घर मंगल गान।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

छंद–गीतिका

जन्म–जरा–मृत्यु विनाशक नीर सम्यक् प्राप्त हो।
जपूँ निज शुद्धात्मा नित आत्मरस उर व्याप्त हो।।

नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान–ध्यान–विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव विषम ज्वर पीर नाशक आत्म–चन्दन प्राप्त हो।
आत्मध्यान करूँ सदा ही ज्ञान रस उर व्याप्त हो।।
नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान–ध्यान–विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारताप–विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–समुद्र विनष्ट अक्षत ज्ञान बिन होता नहीं।
परम अक्षय पद कभी निज ध्यान बिन होता नहीं।।
नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान–ध्यान–विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम–शर का घाव मिटता ज्ञान पुष्प सुवास से।
शील गुण सम्पन्न मिलते आत्मा के पास से।।
नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान–ध्यान–विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाण–विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग विनाश हित निज आत्म–चरु सेवन करूँ।
स्वानुभव रस चरु स्वयं ले राग के बंधन हरूँ।।
नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान–ध्यान–विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग–विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह क्षय के हेतु उर में ज्ञान का दीपक धरूँ।
ज्ञान केवल प्राप्त करके घातिया चारों हरूँ।।

नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान-ध्यान-विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म-ध्यानी रंग लेकर शुक्ल-ध्यानी धूप लूँ।
अष्टकर्म विनाश करके आत्म-सौख्य अनूप लूँ।।

नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान-ध्यान-विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान का फल मोक्षफल है नित नया मिलता सदा।
कृतकृत्य हो निजपद मिला तो मोक्षपद मिलता सदा।।

नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान-ध्यान-विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान के ही अर्घ्य उत्तम बनाने का श्रम करूँ।
पद अनर्घ्य अपूर्व पाकर भ्रमण चहुँगति का हरूँ।।

नेमि प्रभु का जन्म मंगल महोत्सव पूजूँ सदा।
ज्ञान-ध्यान-विराग हो, अब जन्म ना चाहूँ कदा।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-दोहा

नेमिनाथ भगवान का, पूजूँ जन्म कल्याण।
पुनर्जन्म धारूँ नहीं, यही विनय भगवान।।

मति श्रुत अवधि सुज्ञान के, धारी परम विराट।
जन्म समय से ही प्रभो, गुण अनन्त सम्राट।।

छंद-वीर

जन्म-समय साता सागर में, डूबे तीनों लोक सुख्यात।
एक मात्र अन्तर्मुहूर्त को, साता पायी बहु विख्यात।।
इन्द्रासन हिल उठा इन्द्र का, पुलकित हुआ इन्द्र बलवान।
अवधिज्ञान से जाना उसने, जन्मे तीर्थंकर भगवान।।

सप्त सैन्य दल सजा इन्द्र ने, ऐरावत गज मँगवाया।
सब इन्द्रों को विनय पूर्वक, हर्ष पूर्वक बुलवाया।।
नगर शौर्यपुर द्वारे आए, दी प्रदक्षिणा नगरी तीन।
इन्द्राणी भेजी प्रसूति-गृह शची हुई शुभ पुण्याधीन।।

त्वरित मात को नमस्कार कर, माता कर दी माया-लीन।
फिर जिन बालक प्रभु को निरखा, विनयभाव में हुई सुलीन।।
गोदी में ले प्रभु को चल दी, आयी इन्द्र निकट तत्काल।
लिया इन्द्र ने प्रभु को कर में, हर्षित जो थे नन्हें बाल।।

नयन सहस्र बनाए तत्क्षण, निरखा प्रभु को बारम्बार।
तो भी तृप्ति न पायी पलभर, उर में जागा मोद अपार।।
ऐरावत पर चलकर पाण्डुक वन में सभी देव आए।
पाण्डुक शिला विराजित करके, क्षीरोदधि से जल लाए।।

एक-सहस्र-अष्ट कलशों से, सज्जित हो सौधर्म ईशान।
जिनप्रभु का अभिषेक रचाया, गूँजे चारों दिशि जयगान।।

इन्द्राणी ने वस्त्राभूषण पहना, पुण्य अपार लिया।
एक दिठौना काजल का, प्रभु के मस्तक पर लगा दिया।।
नजर न लागे मेरे प्रभु को, ऐसा भाव हृदय आया।
ये तो तीन लोक के अधिपति, झट निश्चय उर में आया।
पुण्योपार्जन कर इन्द्राणी, इक भव अवतारी होती।
स्त्रीलिंग छेद अगले भव, त्रिभुवन से पूजित होती।।
सुरपति फिर शौरीपुर आया, मात-पिता को नमन किया।
ताण्डव नृत्य किया फिर अद्‌भुत, सबके मन को मोह लिया।।
बोला विनय सहित माता से, ये त्रिभुवन के स्वामी हैं।
प्राणाधार हमारे हैं ये, ये ही जग में नामी हैं।।
इनको रखना लाड़-प्यार से, बहुत सावधानी पूर्वक।
ये बालक त्रिभुवन के पति हैं, धनी हमारे हैं सार्थक।।
विदा हो गया इन्द्र अनेक देव नगरी में छोड़ गया।
प्रभु की सेवा करने को वह, प्रभु से सबको जोड़ गया।।
चरणों में लख शंख चिह्न, प्रभु नेमिनाथ का घोषित कर।
प्रभु के इक अंगुष्ठ भाग में, अमृत को फिर थापित कर।।
भव्य विदाई ली सुरपति ने, पहुँचा अपने स्वर्ग विमान।
नित भेजी भोजन वस्त्राभूषण-सामग्री प्रभु हित जान।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-सोरठा

पूजा जन्मकल्याण, नेमिनाथ भगवान का।
पाऊँ पद निर्वाण, जनम न धारूँ अब प्रभो।।

पुष्पाजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ तपकल्याणक पूजन

स्थापना

छंद-रोला

नेमिनाथ का तप कल्याणक महिमाशाली।
पूजा करके होऊँगा मैं बहु गुणशाली।।
मगसिर कृष्णा दशमी को वैराग्य सुहाया।
तप धारण का भाव हृदय में प्रभु के आया।।
गये नाथ वन मेष वृक्ष तल तप उर आया।
दीक्षा धारी नेमिनाथ ने निज को ध्याया।।
पंचमुष्टि कचलोच किया प्रभु ने हर्षित हो।
पंच महाव्रत धारे प्रभु ने बहु पुलकित हो।।
विविध भाँति के अतिशय हुए स्वतः ही पावन।
पूजूँ तप कल्याण हृदय से मैं मनभावन।।

छंद-दोहा

नेमिनाथ भगवान का, जय-जय तप कल्याण।
तप धारूँ प्रभु नेमि सम, पा रत्नत्रय खान।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)
ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

छंद-जोगीरासा

शुद्ध आत्म-जल की धारा पा जन्म मरण दुख नाशूँ।
अविकारी निज पद पाऊँ मैं ज्ञान स्वरूप प्रकाशूँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म-चन्दन की पावन सुरभि हृदय में लाऊँ।
भव आतप ज्वर पूर्ण मिटाऊँ स्वस्थ दशा प्रकटाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म-अक्षत गुणधारी पद अखण्ड के दाता।
राग भाव सब क्षय करते हैं अक्षय सौख्य प्रदाता।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म के ज्ञान-पुष्प से निज को आज सजाऊँ।
कामबाण की पीर विनाशूँ निष्कामी हो जाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म-चरु निराहार पद दाता शिव-सुखकारी।
पूर्ण तृप्ति दायक महिमामय सुखदायक अविकारी।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म-दीपक की पावन जगमग ज्योति जगाऊँ।
मोह महा मिथ्यात्व-तिमिर हर भ्रम अज्ञान भगाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म की ध्यान-धूप ला अष्टकर्म विनशाऊँ।
बनूँ निरंजन भाव-द्रव्य-नोकर्म रहित हो जाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म-फल पाने को मैं शुद्ध आत्मा ध्याऊँ।
शुद्ध भाव के उत्तम फल ले महा मोक्ष फल पाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध आत्म के सुगुण अनन्तों के ही अर्घ्य बनाऊँ।
स्वपद अनर्घ्य प्रकट कर अपना शाश्वत ध्रुव सुख पाऊँ।।
नेमिनाथ का तप कल्याणक उर वैराग्य जगाता।
पूर्ण अनिच्छुक बनने का ही भाव हृदय में आता।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-दोहा

पूजूँ तप कल्याण मैं, तप का जगे विचार।
भाव द्रव्यमय तप करूँ, नाशूँ सकल विकार।।

छंद-वीर

नारायण श्री कृष्ण आदि ने नेमि ब्याह हित किया सुश्रम।
जूनागढ़ की राजकुमारी राजुल नेमि हेतु उत्तम।।
जब बारात द्वारिका से चल दी तो जूनागढ़ आयी।
दूल्हा नेमि प्रभु के कानों में तब करुणा ध्वनि आयी।।
बन्धन में पशु घिरे हुए थे, था बारात का मार्ग विशाल।।

सभी रुके थे राजमार्ग में घर जाने को सायंकाल।।
नेमिनाथ ने देखा पशुओं को उर में करुणा आई।
धिक्-धिक् यह संसार स्वार्थी सबने सुध-बुध बिसराई।।
रथ को मोड़ा गिरनारी की ओर हृदय वैराग्य लिया।
किया चिन्तवन भव्य भावना द्वादश का उर ज्ञान लिया।।
तत्क्षण लौकान्तिक सुर आए धन्य-धन्य जयगान किया।
हे तीर्थेश! आपने अपने मन में उच्च विचार किया।।
सजी पालकी नाम देवकुल सहसावन पहुँचे सुर-संग।
सहसा वन में मेष वृक्ष तल नेमिनाथ हो गए असंग।।
तज चौबीस परिग्रह प्रभु ने पंच महाव्रत धार लिया।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा झट तप परिहार विशुद्ध किया।।
तप कल्याणक मना देव सब गए स्वर्ग की ओर प्रसिद्ध।
मन में सभी विराग भाव से कहते प्रभु जी होंगे सिद्ध।।
प्रभुजी गए घोर वन भीतर गिरनारी पर्वत के पास।
निज स्वभाव की महिमा आयी धारा उर तृतीय उपवास।।
गहन तपस्या लीन हुए फिर नेमि पारणा हित आए।
द्वारावति वरदत्त नृपति गृह ले आहार सु-वन धाए।।
पंचाश्चर्य हुए तत्क्षण ही धन्य हो गए नृप वरदत्त।
भवसागर का सेतु बनाया शिवतट तक मानो उत्कृष्ट।।
प्रभु तो अपने ध्यान मग्न हो वन में विचरण करते थे।
आस्रव भाव नाश करने को संवर उर में धरते थे।।
प्रभु का तप कल्याण महोत्सव सबको ही कल्याणमयी।
अपरिग्रही अनिच्छुक तप ही एक मात्र संसारजयी।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-दोहा

नेमिनाथ भगवान का, पूजा तप कल्याण।
सम्यक् तप धारूँ प्रभो, यही भाव बलवान।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ ज्ञानकल्याणक पूजन

स्थापना

छंद-दोहा

आत्मधर्म धारी प्रभो, धरते शुक्ल ध्यान।
श्रेणी चढ़ निज भाव से, किए घाति अवसान।।
प्रकटा केवलज्ञान रवि, हुए नाथ अरहन्त।
स्व-पर प्रकाशक ज्ञान पा, आप हुए भगवन्त।।
समवशरण रचना हुई, अद्वितीय तत्काल।
प्रातिहार्य वसु देखकर, होते जीव निहाल।।
द्वादश सभा महान लख, हर्षित होते भव्य।
दिव्यध्वनि खिरने लगी, भवदुखहारी दिव्य।।
अन्तरीक्ष प्रभु राजते, परमौदारिक देह।
प्रकटा अनन्त चतुष्टय, राजे अपने गेह।।
अश्विन शुक्ला प्रतिपदा, हुआ ज्ञान कल्याण।
नेमिनाथ भगवान ने, पाया केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

छंद-मानव

सद्धर्म तत्त्व जल वर्षा पा धन्य हुआ मैं स्वामी।
जन्मादि रोग त्रय हारी विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम-सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व चन्दन की पाऊँ सुगन्ध निज स्वामी।
संसार ताप ज्वर क्षय की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारताप–विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व अक्षत गुण मैं उत्तम पाऊँ स्वामी।
ध्रुव अक्षय पद पाने की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व उपवन के पाऊँ मैं पुष्प अकामी।
चिर कामबाण दुख क्षय की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाण–विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व रस निर्मित अनुभव चरु लाऊँ स्वामी।
चिर क्षुधा रोग हरने की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व दीपक की ही ज्योति जगाऊँ स्वामी।
मोहान्धकार भ्रम क्षय की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।

श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व की पावन ध्रुव धूप प्राप्त हो स्वामी।
आठों कर्मों के क्षय की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व तरु फल का ही फल पाऊँ हे स्वामी।
विधि महा मोक्ष फल पाने की पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्धर्म तत्त्व अर्घ्यावलि अन्तर में लाऊँ स्वामी।
पदवी अनर्घ्य पाने की विधि पाऊँ अन्तर्यामी।।
श्री नेमिनाथ को वन्दूँ नित ज्ञान कल्याण मनाऊँ।
घातिया नाश कर तुम–सम कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद–दोहा

नेमिनाथ भगवान का, पूजूँ ज्ञान कल्याण।
मैं भी घाति अभाव कर, पाऊँ केवलज्ञान।।

छंद–वीर

घोर तपस्या करते करते प्रभु ने ध्याया शुक्लध्यान।
घाति सैंतालिस अघाति सोलह प्रकृति कर्म की, की अवसान।।
स्व–पर प्रकाशक केवलज्ञान हृदय में प्रभुजी के प्रकटा।
रही शेष मात्र भव छाया सम यह भवसागर विघटा।।
तत्क्षण ही कुबेर ने आकर समवशरण रच दिया महान।
जो कि डेढ़ योजन विस्तृत था अनुपम उत्तम श्रेष्ठ प्रधान।।
अष्ट भूमियाँ समवशरण की प्राचीरें भी चार महान।
अष्ट प्रातिहार्यों की शोभा तीन लोक में महा महान।।
प्रथम छत्र–त्रय अशोक शोकहर भामंडल अरु चमर पवित्र।
जय दिव्यध्वनि निज जयध्वनि रत्नजड़ित सिंहासन चित्र।।
द्वादश सभा विराजित सुन्दर सुनती है श्री जिनवाणी।
त्रिभुवन को कल्याणकारिणी भव्यों को बहु सुखदानी।।
चार समय दिव्यध्वनि खिरती प्रात: सायं अपराह्न रात।
इसे झेलते हैं गणधर ऋषि व्याख्या करते हैं प्रख्यात।।
समवशरण में नर सुर पशु सज निज निज कोठों में रहते।
वीतराग मुद्रा परमौदारिक देख देख सुख–सरि बहते।।
साढ़े बारह कोटि वाद्य बजते रहते हैं तीन समय।
गंधोदक वर्षा होती है प्राणी होता आनन्दमय।।
प्रभु के ऋषि मंडल में सात प्रकार महाऋषि रहते थे।
श्री केवली पन्द्रह सौ थे नव शत मन:पर्यय पति थे।।
ग्यारह सौ थे ऋद्धि विक्रिया धारी वादी आठ शतक।
अवधिज्ञानी पन्द्रह सौ तथा पूर्वधारी थे चार शतक।।
शिक्षक ग्यारह सहस्र आठ सौ सब मिल सहस अठारह थे।
गणधर ग्यारह प्रतिभाशाली मुख्य वरदत्त गणधर थे।।
एक लाख अरु आठ सहस्र आर्यिका श्वेत वस्त्र धारी।
मुख्य आर्यिका सर्वश्री थीं उनकी थी महिमा न्यारी।।

राजुल भी दीक्षा धारण कर हुई आर्यिका श्रेष्ठ त्वरित।
इस भव नेमि दिव्यध्वनि सुन मुक्तिमार्ग पाया निज हित।।
श्रावक संख्या एक लाख थी तथा श्राविका थीं त्रय लाख।
श्रोता मुख्य उग्रसेन थे समवशरण त्रिभुवन विख्यात।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद–दोहा

नेमिनाथ भगवान का, पूजूँ ज्ञान कल्याण।
मैं भी पाऊँ हे प्रभो, केवलज्ञान महान।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ स्तवन

ब्रह्ममय परिणति के हो धारक प्रभु,
नेमि जिनवर नमन भाव से नित करूँ।
जग में वैराग्य अनुपम विभो आपका,
आप–सा ही दयाभाव उर में धरूँ।।
होके भोगों में अंधा भटकता फिरा,
घात निज–पर का करता रहा हर्ष धर।
आपके दर्श कर दृष्टि सम्यक् मिली,
मेरा चैतन्य चिद्रूप आया नजर।।
हे प्रभो! भावना आपको ध्याय कर,
आप ही आप–सा आत्मयोगी बनूँ।
तज के किंपाक फल सम विषय भोग मैं,
आत्मवैभव का स्वाधीन भोगी बनूँ।।
चाहे अनुकूलता हो या प्रतिकूलता,
होवे समतामयी नाथ परिणति मेरी।
भवरहित भाव चैतन्य में लीन हो,
हे प्रभो! अब मिटे मेरी भव–भव फेरी।।

श्री नेमिनाथ मोक्षकल्याणक पूजन

स्थापना

छंद–दोहा

नेमिनाथ भगवान का, धन्य मोक्ष कल्याण।
बने अयोगी महाप्रभु, किए योग अवसान।।
प्रथम समय में बहत्तर, अंतिम तेरह नाश।
एक समय में शिव गए, पाया सिद्ध प्रकाश।।
तन कपूरवत् उड़ गया, शेष रहे नख–केश।
अग्निकुमारों ने तभी, भस्म किया तन शेष।।
शुक्ल असाढ़ की सप्तमी, हुआ मोक्ष कल्याण।
नेमिनाथ भगवान ने, पाया पद निर्वाण।।

छंद–शार्दूलविक्रीडित

उत्तम निर्मल आत्मज्ञान हो प्रभु, शिव सौख्य होवे सदा।
मिट जाए अज्ञान भाव मेरा, दुख हो नहीं उर कदा।।
अवसर पाकर करूँ ज्ञान अपना, शिवमार्ग को प्राप्त हो।
अन्तर में हो परमशान्ति स्वामी, अनुभव स्वरस व्याप्त हो।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

छंद–मानव

जल लाऊँ सिद्ध स्वभावी त्रय रोग नाश करने को।
जन्मादि रोग की पीड़ा आया हूँ प्रभु हरने को।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन हो सिद्ध स्वभावी भव ताप नाश करने को।
भव ज्वर सम्पूर्ण विनाशूँ मैं सर्व पाप हरने को।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय संसारताप–विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत स्वभाव के चरु ही उत्तम धवलोज्ज्वल लाऊँ।
अक्षय पद निज प्रकटाऊँ परमात्म परम पद पाऊँ।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज पुष्प शीलमय लाऊँ कामाग्नि बुझा के स्वामी।
चौरासी लाख शील गुण प्रकटाऊँ अन्तर्यामी।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाण–विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अनुभव रसमय चरु की महिमा से शोभित होऊँ।
पद निराहार निज पाऊँ चिर क्षुधा–व्याधि मैं खोऊँ।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान ज्योतिमय दीपक अन्तर में हे प्रभु! लाऊँ।
मोहाग्नि बुझाऊँ स्वामी कैवल्य ज्ञान निधि पाऊँ।।

मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों सम बनने को ही निज धूप ध्यानमय लाऊँ।
वसु कर्म ज्वाल की ज्वाला निज बल से नाथ बुझाऊँ।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मज्ञान फल अनुपम ध्रुव मोक्ष महाफल पाऊँ।
फिर सादि अनन्तकाल तक शाश्वत आनन्द उठाऊँ।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावलि चरण चढ़ाऊँ निज शुद्ध भाव की पावन।
पदवी अनर्घ्य प्रभु जो है, बन मुनि पाऊँ मनभावन।।
मैं मोक्ष कल्याण मनाऊँ श्री नेमिनाथ स्वामी का।
जय गान करूँ त्रिभुवनपति जिनवर अन्तर्यामी का।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-दोहा

मैं भी कर्म विनाश कर, पाऊँ पद निर्वाण।
भक्ति विनय से पूजता, मैं भी मोक्ष कल्याण।।

छंद-ताटंक

क्षायिक श्रेणी माँडी प्रभु ने गुणस्थान अष्टम पाकर।
नवम दशम बारहवाँ पाया घाति कर्म सब विनाश कर।।
फिर योगों का अभाव करके बने अयोगी शिवगामी।
प्रथम समय में नाश बहत्तर प्रकृति त्वरित अन्तर्यामी।।
अन्त समय तेरह भी नाशीं आप हुए निर्भार स्वयं।
एक समय में ऊर्ध्व लोक जा सिद्ध हो गए आप परम।।
त्रिलोकाग्र निज सिद्धशिला पर आप विराजे आठों याम।
सादि अनन्तानन्त काल को पाया शाश्वत निज ध्रुवधाम।।
देवों ने शुभ मंगल गाए गूँजा प्रभु का जय जयकार।
तन कपूरवत् उड़ा निमिष में मोक्ष स्वपद पाया अविकार।।
केशादिक संस्कार किये फिर सभी सुरों ने हर्षित मन।
नेमि मोक्ष कल्याण महोत्सव हुआ सभी को मनभावन।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-दोहा

पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, पूजूँ मोक्ष कल्याण।
मैं भी पाऊँ मोक्ष प्रभु, पाऊँ सौख्य महान।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

अंतिम महार्घ्य

छंद-समान सवैया

नेमिनाथ निर्द्वन्द्व निरामय निष्कलंक निर्दोष निरंजन।
निश्चल नित्यानन्द निरायुध निर्वचनीय नवल निष्कंचन।।
शिवादेवी के लाल समुद्रविजय के सुत यादव कुलभषण।
बाल ब्रह्मचारी व्रत धारी विद्या निधि उज्ज्वल निर्दूषण।।
विषयातीत वीत विस्मय विभु विघ्न विनाशक हे विश्वेश्वर।
विश्वशीर्ष विश्वज्ञ विनयपति धर्मध्यान धारी प्रणतेश्वर।।

मंगलमयी महान दयानिधि सुगुण विभूति महा योगीश्वर।
शंख चिह्न पद महाब्रह्मपति परम मुक्ति वल्लभ जगदीश्वर।।
नाम आपका सुनकर आया शरण आपकी मैंने पायी।
पाप–पुण्य सन्ताप विनाशक नाशो मोह महादुखदायी।।
भेदज्ञान विज्ञान प्राप्त कर निज स्वरूप में वास करूँ मैं।
नाथ आपकी महा कृपा से वसु कर्मों का नाश करूँ मैं।।

ॐ ह्रीं गर्भ–जन्म–तपो–ज्ञान–मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथ–जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाजयमाला

छंद–वीर

जय नेमिनाथ नित्योदित जिन जय नित्यानन्द नित्य चिन्मय।
जय निर्विकल्प निश्चल निर्मल जय निर्विकार नीरज निर्भय।।
नृपराज समुद्रविजय के सुत माता शिवादेवी के नन्दन।
आनन्द शौर्यपुरी में छाया जय–जय से गूँजा पाण्डुक वन।।
बालकपन में क्रीड़ा करते तुमने धारे अणुव्रत सुखमय।
द्वारिकापुरी में रहे अवस्था पाई सुन्दर यौवन वय।।
आमोद–प्रमोद तुम्हारे लख पूरा यादव कुल हर्षाता।
तब श्रीकृष्ण नारायण ने जूनागढ़ से जोड़ा नाता।।
राजुल के परिणय करने का जूनागढ़ पहुँचे वर बनकर।
जीवों की करुण पुकार सुनी जागा उर में वैराग्य प्रखर।।
पशुओं को बन्धन मुक्त किया कंगन विवाह का तोड़ दिया।
राजुल के द्वारे आकर भी स्वर्णिम रथ पीछे छोड़ दिया।।
रथ त्याग चढ़े गिरनारी पर जा पहुँचे सहस्रनाम वन में।
वस्त्राभूषण सब त्याग दिये जिन दीक्षा धारी तन–मन में।।
फिर उग्र तपस्या के द्वारा निश्चय स्वरूप मर्मज्ञ हुए।
घातिया कर्म चारों नाशे, छप्पन दिन में सर्वज्ञ हुए।।

तीर्थंकर प्रकृति उदय आई सुर हर्षित समवसरण रचकर।
प्रभु गंधकुटी में अन्तरिक्ष आसीन हुए पद्मासन धर।।
कर प्राप्त चतुर्दश गुणस्थान योगों का पूर्ण अभाव किया।
कर ऊर्ध्वगमन सिद्धत्व प्राप्त कर सिद्धलोक आवास लिया।।
गिरनार शैल से मुक्त हुए तन के परमाणु उड़े सारे।
पावन मंगल निर्वाण हुआ सुरगण के गूँजे जयकारे।।
परिणाम शुद्ध का अर्चन कर हम अन्तरध्यानी बन जावें।
घातिया चार कर्मों को हर हम केवलज्ञानी बन जावें।।
निज सिद्ध स्व–पद पाने को प्रभु हर्षित चरणों में आया हूँ।
वसु द्रव्य सजाकर नेमीश्वर! प्रभु पूर्ण अर्घ्य में लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं गर्भ–जन्म–तपो–ज्ञान–मोक्षकल्याणकविभूषित श्री नेमिनाथ–जिनेन्द्राय महाजयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

छंद–ताटंक

निज भावों का महा अर्घ्य ले पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
जिनवाणी जिनधर्म शरण पा देव–शास्त्र–गुरु उर लाऊँ।।
तीस चौबीसी बीस जिनेश्वर कृत्रिम–अकृत्रिम चैत्य ध्याऊँ।
सर्व सिद्ध प्रभु पंचमेरु नन्दीश्वर गणधर गुण गाऊँ।।
सोलहकारण दशलक्षण रत्नत्रय नव सुदेव पाऊँ।
चौबीसों जिन भूत भविष्यत वर्तमान जिनवर ध्याऊँ।।
तीन लोक के सर्वबिम्ब जिन वन्दूँ जिनवर गुण गाऊँ।
अविनाशी अनर्घ्य पद पाऊँ आत्मगुणों को प्रकटाऊँ।।

छंद–दोहा

महा अर्घ्य अर्पण करूँ, पूर्ण विनय से देव।
आप कृपा से प्राप्त हो, परम शान्ति स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वपूज्यपदेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

छंद-गीतिका

सुख-शान्ति पाने के लिए पुरुषार्थ मैंने प्रभु किया।
नेमिनाथ विधान करके आत्म-सुख मैंने लिया।।
अब नहीं चिन्ता मुझे है ना कभी होऊँगा अशान्त।
आज मैंने स्वत: पाया ज्ञान का सागर प्रशान्त।।
विश्व के प्राणी सभी चिर-शान्ति पायें हे प्रभो।
मूलभूत निजात्मा का ज्ञान ही पायें विभो।।
मूल भूल विनष्ट करके नाथ मैं ज्ञानी बनूँ।
भक्ति रत्नत्रय हृदय हो पूर्णत: ध्यानी बनूँ।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

क्षमापना पाठ

छंद-दोहा

भूल-चूक कर दो क्षमा, हे त्रिभुवन के नाथ।
आप कृपा से हे प्रभो, मैं भी बनूँ स्वनाथ।।
अल्प नहीं है हे प्रभो, पूजन विधि का ज्ञान।
अपना सेवक जानकर, क्षमा करो भगवान।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

(अनुष्टुप्)

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमो गणी।
मङ्गलं कुन्दकुन्दार्यो जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम्।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारकम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।

*****